SALTOC Project
Title: Madhumatī
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādamī
OCLC: 3195624
Volume 44: no 6, June 2004

TOC Supplied By: Columbia University Libraries

मधुमती

जून, 2004

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

अनुक्रम

आभार

पर्यटन और मिथकीय परम्परा/विष्णु प्रभाकर 5

निबंध

प्रेमचंद का उपन्यास 'रूठी रानी' : मौलिक या अनुवाद / *डॉ. कमल किशोर गोयनका* 10

बच्चन जी, दुष्यंत और मैं / *नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी* 14

समकालीन कविता में राजनीतिक यथार्थ / प्रो. के.के. शर्मा, सुश्री प्रीति भट्ट 17

मलयालम नाटक और रंगमंच : एक अन्तरंग यात्रा / *डॉ. एस.एस. विश्वंभरन* 25

संस्कृति

परदेशी पुत्री के नाम पाती / *डॉ. मृदुला सिन्हा* 29

स्मरण

मेरे साहित्य जीवन के चिरस्मरण / *पं. जनार्दनराय नागर* 33

कबीर सदैव प्रासंगिक रहेंगे / *देवकिशन राजपुरोहित* 40

नव-सृजन

डरती है नदी, नदी से पूछकर देखो, यह खूब रोती है, जानती है नदी / *श्री अतुल कनक* 42

कविता/गीत-ग़ज़ल

घोंसला, अहसास / *यतीन्द्र तिवारी* 44

कबीरा खड़ा बाज़ार में, पाहुन परशुराम / *डॉ. दयाकृष्ण विजय* 45

एक स्त्री का शोक गीत / *गोविन्द माथुर* 48

आस्तीन का साँप, मैं एक साइनबोर्ड / *श्रीमती अजित गुप्ता* 49

देवा / *नदीम अहमद 'नदीम'* 51

कोई आए / *राजेन्द्र उपाध्याय* 51

फिर भी चुप हैं / *भरत प्रसाद त्रिपाठी* 52

जीवन के तल मौत कु जाने, वियोगिनी.... / *शीलव्रत शर्मा 'शील'* 53

तीन ग़ज़लें / *इक़बाल सागर* 54

तीन ग़ज़लें / *देवेन्द्र आर्य* 55

उपन्यास अंश

ईंधन : रोहित / *डॉ. स्वयं प्रकाश* 56

नवांकुर

प्रेम बेल का पहला पत्ता / *दिनेश त्रिवेदी* 66

इन्द्रधनुष, भूख / *राजेश नारायण लश्करी* 67

कैसे मैं जिऊँ / *वन्दना* 67

कहानी

वह कैसे मरा ? / *प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा* 68

देह गंध / *श्री शचीन्द्र उपाध्याय* 74

आए जब आना है / *डॉ. राजानंद* 77

शून्य में ताकती आँखें / *ज्योत्स्ना इन्द्रेश* 80

सपनों का पिंजरा / *डॉ. सावित्री डागा* 84

लघु कथा

पाप का भागीदार / *श्री नवलसिंह जैन* 83

लघु नाटक

पिघलते पत्थर / *श्री लक्ष्मीनारायण रंगा* 88

व्यंग्य

वाटर मैनिया / *श्री कृष्ण कुमार आशु* 95

भाषान्तर

अनात्मीय / *श्री भोलाशंकर बेहेरा* 97

पुनरुत्थान, युग गान, पक्षी जो.... / *मूल : सत्यनारायण राव अणति* / अनु : डी.एन. श्रीनाथ 104

एक और बुरी औरत, वह रात / *मूल : निरूपमा दत्त* / *अनु : योगेश्वर कौर* 105

समीक्षा

भीड़ में सबसे अलग, करवट लेता समय / *देवर्षि कलानाथ शास्त्री* 106

कितना अकेला आकाश, सुगन्ध जीवन की, गुजराती के प्रयोगशील एकांकी / *डॉ. सियाराम सक्सेना प्रवर* 109

सरहद के आरपार, देह के उजाले में, चेहरे सब तमतमाये हुए हैं,

आईनों में देखिये, अच्छी लगती है गुफ्तगू तेरी, माटी के सपूत / *कुन्दन माली* 113

साहित्यिक परिदृश्य 120

संवाद 125

मधुमती प्राप्ति स्वीकार 127